फोक्सवैगन घोटाला: क्या किया जा सकता है?

फोक्सवैगन कार कंपनी पर आरोप यह है कि उसने अपनी कारों से निकलने वाले धुएं (उत्सर्जन) की जांच के साथ छेड़छाड़ की। उन्होंने अपनी कारों के इंजिनों में एक सॉफ्टवेयर फिट किया। जब उत्सर्जन की जांच का समय आता था तो यह सॉफ्टवेयर इंजिनों की सेटिंग को कुछ समय के लिए बदल देता था। तो ये कारें उत्सर्जन की जांच में सफल हो जाती थीं। मगर सड़क पर पहुंचते ही ये एक बार फिर 35 गुना ज़्यादा नाइट्रोजन ऑक्साइड उगलने लगती थीं। कार निर्माता के मुताबिक दुनिया भर में 1.1 करोड़ कारों में ऐसा सॉफ्टवेयर फिट किया गया है।

यह तो हुई जानबूझकर की गई धोखाधड़ी की बात। मगर एक बात यह पता चली है कि आम तौर पर सड़कों पर कारों से निकलने वाले नाइट्रोजन ऑक्साइड्स की मात्रा प्रयोगशाला जांच के दौरान निकलने वाले नाइट्रोजन ऑक्साइड्स से 7 गुना ज़्यादा होती है। प्रयोगशाला जांच में कार को एक ट्रेडमिल पर निर्धारित पैटर्न में दौड़ाया जाता है। यह भी देखा गया है कि अन्य प्रदूषक (कणीय पदार्थ और कार्बन डाईऑक्साइड) भी वास्तविक ड्राइविंग के दौरान ज़्यादा निकलते हैं।

इसीलिए युरोपीय संघ में 2017 से वास्तविक स्थिति में जांच की व्यवस्था लागू की जा रही है। खास तौर से नाइट्रोजन ऑक्साइड पर नज़र रखना ज़रूरी है क्योंकि ये सांस सम्बंधी रोगों और हृदय रोगों के लिए ज़िम्मेदार पाए गए हैं। ऐसी वास्तविक स्थिति में की जाने वाली जांच कोई नई बात नहीं है। इससे पहले यूएस में भारी वाहनों के मामले में इसी तरह की धोखाधड़ी की घटनाएं प्रकाश में आई थीं और तब यूएस की पर्यावरण सुरक्षा एजेंसी ने भारी वाहन निर्माताओं पर मुकदमा चलाया था। तब से सड़क चलते वाहनों के उत्सर्जन की जांच लागू की गई थी। इसमें कुछ वाहनों में पोर्टेबल उपकरणों की मदद से वास्तविक परिस्थिति में जांच की जाती है।

इस तरह की जांच को लेकर वाहन-निर्माता बहुत खुश नहीं हैं। उनका कहना है कि वास्तविक उत्सर्जन कई बातों पर निर्भर करता है - जैसे वाहन कितनी खड़ी चढ़ाई पर है, ड्राइवर कितनी तेज़ी से गाड़ी की स्पीड बढ़ाता है वगैरह। इन समस्याओं से निपटने के लिए युरोपीय संघ में जो जांच व्यवस्था लागू की जा रही है, उसमें एक निर्धारित ड्राइविंग पैटर्न का पालन किया जाएगा। इस व्यवस्था को कारों पर लागू करने में दिक्कत यह है कि पोर्टेबल जांच उपकरण काफी बड़ा है जिसे कारों में फिट नहीं किया जा सकता।

अभी यह देखना बाकी है कि क्या सिर्फ फोक्सवैगन ने ही धोखाधड़ी की है या अन्य कार निर्माता भी ऐसा करते रहे हैं। और मुख्य चुनौती यह है कि जांच की प्रयोगशाला परिस्थिति से आगे बढ़कर वास्तविक उत्सर्जन की जांच कैसे की जाए ताकि स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभावों को कम से कम किया जा सके। ***(स्रोत फीचर्स)***